5 सुमित्रानन्दन पन्त

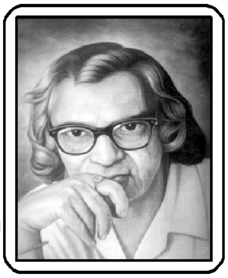

सुमित्रानन्दन पन्त का जन्म 20 मई, 1900 ई० में कौसानी ग्राम, जिला अल्मोड़ा (उत्तरांचल) में हुआ था। जन्म के छह घण्टे बाद ही इनकी माता का शरीरान्त हो गया। इनका लालन-पालन प्रकृति की गोद में हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा ग्राम की पाठशाला में हुई। हाईस्कूल की परीक्षा वाराणसी से पास करके ये प्रयाग के म्योर सेन्ट्रल कॉलेज में प्रविष्ट हुए, किन्तु सन् 1921 ई० में असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ होने पर कॉलेज छोड़कर साहित्य-साधना में प्रवृत्त हुए। इन्होंने संस्कृत, अंग्रेजी तथा बँगला का गम्भीर अध्ययन किया। उपनिषद्, दर्शन तथा आध्यात्मिक

कवि-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म–** 20 मई, 1900 ई०।
- **जन्म-स्थान–**कौसानी (अल्मोड़ा-उत्तराखण्ड)
- **शिक्षा–**इण्टरमीडिएट।
- **पिता–** पं० गंगादत्त पन्त।
- **माता–** सरस्वती देवी।
- **वास्तविक नाम–** गुसाईंदत्त।
- **लेखन विधा–** काव्य और गद्य।
- **भाषा–** सरल, सरस तथा सुकोमल, खड़ीबोली।
- **शैली–** चित्रमय, संगीतात्मक, मुक्तक।
- **मृत्यु–** 28 दिसम्बर, 1977 ई०।

साहित्य की ओर भी इनकी रुचि रही। संगीत से भी इन्हें प्रेम था। सन् 1950 ई० में पन्त जी 'ऑल इण्डिया रेडियो' के परामर्शदाता के पद पर नियुक्त हुए और सन् 1957 ई० में प्रत्यक्ष रूप से रेडियो से सम्बद्ध रहे। दीर्घकाल तक हिन्दी साहित्य की निरन्तर सेवा की। साहित्य अकादमी ने 'कला और बूढ़ा चाँद' के लिए इन्हें पुरस्कृत किया तथा भारत-सरकार ने इन्हें 'पद्मभूषण' अलंकरण से सम्मानित किया। इनकी कृति **'चिदम्बरा'** पर भारतीय ज्ञानपीठ का एक लाख रुपये का पुरस्कार प्रदान किया गया। आपको 'लोकायतन' पर सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार दिया गया। सरस्वती के इस पुजारी ने 28 दिसम्बर, 1977 ई० में इस भौतिक संसार से सदैव के लिये विदा ले ली।

इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं—**वीणा, ग्रन्थि, पल्लव, पल्लविनी, अतिमा, गुंजन, युगान्त, युगवाणी, ग्राम्या, स्वर्णकिरण, स्वर्णधूलि, उत्तरा, कला और बूढ़ा चाँद, युगपथ, शिल्पी, चिदम्बरा, ऋता, लोकायतन, रश्मिबन्ध, रजत शिखर** आदि।

'प्रसाद' तथा 'निराला' की भाँति पन्त भी छायावाद के आधार-स्तम्भ हैं। छायावाद अपने पूरे सौन्दर्य और समृद्धि के साथ पन्त के काव्य में प्रकट हुआ है। ये प्रकृति के सुन्दर, सजीव, मनोरम दृश्य अंकित करने में सिद्धहस्त हैं, अतः इन्हें 'प्रकृति का सुकुमार कवि' कहा जाता है। पन्त के काव्य-जीवन की यात्रा के स्पष्टतः तीन सोपान माने जा सकते हैं—

1. छायावादी काव्य रचनाएँ, 2. प्रगतिवादी काव्य तथा 3. श्री अरविन्द के दर्शन से प्रभावित होने के पश्चात् की अन्तश्चेतनावादी, आध्यात्मिक कविताएँ, जहाँ ये मानवतावाद के सच्चे समर्थक के रूप में प्रकट हुए हैं।

पन्त के काव्य में मानवता के प्रति सहज आस्था है। ये एक नवीन, सुन्दर, सुखी समाज की सृष्टि के प्रति आशावान हैं। विश्व-बन्धुत्व और भ्रातृत्व के प्रति यह आशावादी स्तर ही इनके काव्य को उदात्त बनाता है। पन्तजी सात वर्ष की अल्पायु से ही कविताओं की रचना करने लगे थे। इनकी प्रथम रचना सन् 1916 ई० में सामने आयी। 'गिरजे का घण्टा' नामक इस रचना के पश्चात् ये निरन्तर काव्य-साधना में तल्लीन रहे।

इनकी भाषा चित्रमयी एवं अलंकृत है तथा स्पष्ट, सशक्त बिम्ब-योजना ने उसे अत्यन्त प्रभावमयी बना दिया है। संक्षेप में सुन्दर, सुकुमार भावों के चतुर-चितेरे पन्त ने खड़ीबोली को ब्रजभाषा जैसा माधुर्य एवं सरसता प्रदान करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। पन्त गम्भीर विचारक, उत्कृष्ट कवि और मानवता के सहज आस्थावान कुशल शिल्पी थे, जिन्होंने नवीन सृष्टि के अभ्युदय की कल्पना की। पन्तजी की शैली गीतात्मक मुक्तक शैली है, जिसमें सरलता, संगीतात्मकता और अभिव्यञ्जना-शक्ति की प्रधानता है।

●●

चींटी

चींटी को देखा?
वह सरल, विरल, काली रेखा
तम के तागे सी जो हिल-डुल
चलती लघुपद पल-पल मिल-जुल
वह है पिपीलिका पाँति!
देखो ना, किस भाँति
काम करती वह संतत!
कन-कन कनके चुनती अविरत!

गाय चराती,
धूप खिलाती,
बच्चों की निगरानी करती,
लड़ती, अरि से तनिक न डरती,
दल के दल सेना सँवारती,
घर आँगन, जनपथ बुहारती!

चींटी है प्राणी सामाजिक,
वह श्रमजीवी, वह सुनागरिक!

देखा चींटी को?
उसके जी को?
भूरे बालों की सी कतरन,
छिपा नहीं उसका छोटापन,
वह समस्त पृथ्वी पर निर्भय
विचरण करती, श्रम में तन्मय,
वह जीवन की चिनगी अक्षय!

वह भी क्या देही है, तिल-सी?
प्राणों की रिलमिल झिलमिल सी!
दिन भर में वह मीलों चलती,
अथक, कार्य से कभी न टलती।।

('युगवाणी' से)

चन्द्रलोक में प्रथम बार

चन्द्रलोक में प्रथम बार,
मानव ने किया पदार्पण,
छिन्न हुए लो, देश काल के,
दुर्जय बाधा बंधन!
दिग्विजयी मनु-सुत, निश्चय
यह महत् ऐतिहासिक क्षण,
भू-विरोध हो शांत,
निकट आएँ सब देशों के जन।

युग-युग का पौराणिक स्वप्न
हुआ मानव का संभव,
समारंभ शुभ नये चन्द्रयुग का
भू को दे गौरव!

फहराए ग्रह उपग्रह में
धरती का श्यामल अंचल,
सुख संपद् सम्पन्न जगत् में
बरसे जीवन-मंगल!

अमरीका सोवियत बनें
नव दिक् रचना के वाहन
जीवन पद्धतियों के भेद
समन्वित हों, विस्तृत मन!

अणु-युग बने धरा जीवन हित
स्वर्ग सृजन का साधन,
मानवता ही विश्व सत्य
भू-राष्ट्र करें आत्मार्पण।

धरा चन्द्र की प्रीति परस्पर
जगत प्रसिद्ध, पुरातन,
हृदय-सिंधु में उठता
स्वर्गिक ज्वार देख चन्द्रानन!

('ऋता' से)

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

1. निम्नलिखित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—
(क) चींटी को .... पिपीलिका पाँति!
(ख) चन्द्रलोक में .... देशों के जन।
(ग) अमरीका सोवियत .... विस्तृत मन!
(घ) अणु-युग .... आत्मार्पण! **(2016CF)**
अथवा अणु-युग .... चन्द्रानन। **(2020MC)**

2. सुमित्रानन्दन पन्त का जीवन-परिचय दीजिए तथा उनकी रचनाओं पर प्रकाश डालिए। **(2016CB,CC,CD,CG, 17AD,18HF,19AA,AB,AG,20MB)**

3. सुमित्रानन्दन पन्त का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

4. सुमित्रानन्दन पन्त का जीवन-वृत्त लिखकर उनके साहित्यिक योगदान का उल्लेख कीजिए।

5. सुमित्रानन्दन पन्त की जीवनी तथा उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए और काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

➡ चींटी

6. 'चींटी' कविता का सारांश लिखिए।

7. सुमित्रानन्दन पन्त द्वारा रचित 'चींटी' शीर्षक कविता का भावार्थ लिखिए।

8. पन्तजी ने चींटी को किसका प्रतीक माना है?

9. चींटी को कवि सामाजिक प्राणी और सुनागरिक क्यों कहता है?

10. 'प्राणों की रिलमिल-झिलमिल सी' पंक्ति में काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

➡ चन्द्रलोक में प्रथम बार

11. चन्द्रलोक में मानव के प्रथम पदार्पण को कवि ने महत् ऐतिहासिक क्षण क्यों कहा है?

12. मनुष्य का युग-युग का पौराणिक स्वप्न क्या रहा है?

13. कवि की दृष्टि अमेरिका-सोवियत तक सीमित क्यों है?

14. 'हृदय सिन्धु में उठता, स्वर्गिक ज्वार देख चन्द्रानन' का भाव स्पष्ट कीजिए।

15. मानव के चन्द्रलोक पर पहुँच जाने के बाद 'चन्द्रानन' की कल्पना कहाँ तक सार्थक है?

16. 'चन्द्रलोक में प्रथम बार' कविता का सारांश लिखिए।

17. चन्द्रलोक में मानव के प्रथम पदार्पण से भावी मानव-समृद्धि की कैसी कल्पना कवि के मन में आती है? पाठ के आधार पर उत्तर लिखिए।

18. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त रस, छन्द और अलंकार की पहचान कीजिए–

अणु-युग बने धरा जीवन हित
स्वर्ग सृजन का साधन,
मानवता ही विश्व सत्य
भू-राष्ट्र करें आत्मार्पण।

➡ आन्तरिक मूल्यांकन

(i) सुमित्रानन्दन पंत की प्रमुख रचनाओं की एक सूची तैयार कीजिए।
(ii) सुमित्रानन्दन पंत का जीवन-परिचय तालिका के माध्यम से दर्शाइए।

टिप्पणी

➨ चींटी

विरल = पतली, जो घनी न हो। **तम** = अँधेरा, अंधकार। **लघु पद** = छोटे-छोटे कदम। **पाँति** = पंक्ति। **सतत** = निरंतर, लगातार। **पिपीलिका** = चींटी। **गाय चराती धूप खिलाती** = प्राणिशास्त्र के विद्वानों का कथन है कि चींटियों में भी गायें होती हैं तथा चीटियाँ ही उनको चराने जाती हैं। **श्रमजीवी** = परिश्रम से जीनेवाले। **भूरे बालों की सी कतरन** = चींटी के लिए सर्वथा एक नवीन उपमान, उपमा। **चिनगी** = चिनगारी, अग्निकण। **प्राणों की रिलमिल झिलमिल सी** = चींटी छोटी है परन्तु अति जीवनपूर्ण, शक्ति से भरी हुई-सी इधर-उधर घूमती-फिरती रहती है। **अक्षय** = कभी क्षीण न होने वाली। **अथक** = बिना थके।

➨ चन्द्रलोक में प्रथम बार

अणु युग बने धरा जीवन हित = विज्ञान का सम्पूर्ण विकास मानव के कल्याण के लिए प्रयुक्त हो। **धरा चन्द्र की........पुरातन** = पृथ्वी तथा चन्द्रमा का प्रेम बहुत पुराना है। एक विश्वास के अनुसार चन्द्रमा पृथ्वी का ही एक टुकड़ा था, जो टूट कर अलग छिटक कर जा गिरा। आज भी पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा को देखकर सागर में ज्वार आ जाना मानो इस प्रेम का प्रमाण है। **पौराणिक स्वप्न** = पुराण काल से चला आ रहा स्वप्न। **समारम्भ** = भलीभाँति प्रारम्भ। **ज्वार** = पूर्णिमा के दिन, रात को चन्द्रमा को देखकर समुद्र की जलतरंगों का ऊपर उठना ज्वार कहलाता है तथा उसका उतार भाटा कहलाता है। **चन्द्रानन** = (चन्द्र + आनन) चन्द्रमा का मुख। **प्रथम** = पहला। **पदार्पण** = कदम रखना। **दुर्जय** = अजेय, जिसे जीता न जा सके। **बाधा** = अवरोध, आपत्ति। **मनु-सुत** = मनु के पुत्र अथवा मनुष्य। **महत्** = बड़ा। **भू** = पृथ्वी, धरती। **विरोध** = झगड़ा। **ग्रह** = सूर्य की परिक्रमा करने वाले ग्रह। **उपग्रह** = किसी बड़े ग्रह के चारों ओर घूमने वाले छोटे ग्रह। **श्यामल** = हरा-भरा। **नव दिक्** = नई दिशाएँ। **पद्धति** = रास्ता। **विस्तृत** = बड़ा। **समन्वित** = इकट्ठा। **धरा** = भूमि, पृथ्वी। **सृजन** = निर्माण। **आत्मार्पण** = आत्मसमर्पण।

●●